بسم الله الرحمن الرحيم و الصلوة و السلام على رسول الله و على ازواجه و اله و اصحابه اجمعين الى يوم الدين

12 ربیع الاول 1430ھ

ग़ैर इस्लामी नज़रियात बमुक़ाबला सहीह इस्लामी अक़ाइद

10 مارچ 2009ء

मेरे मुसलमान भाईयों ! शैतानी वसवसों के बावजूद अपनी मौत से पहले पहले सिर्फ़ एक मर्तबा इस तहरीर को अव्वल ता आख़िर लाज़मी, लाज़मी, लाज़मी पढ़ लें!

अलहम्दु लिल्लाह ﷻ ! हम सब मुसलमान हैं और हमारे ईमान की असल बुनियाद ﷻ اللّٰہ और उसके प्यारे रसूल ﷺ की सच्ची मुहब्बत ही है। यही वजह है कि कोई भी मुसलमान जान बूझ कर कभी भी इन दो हस्तियों से मुताल्लिक गुस्ताख़ाना नज़रियात का सोच भी नहीं सकता। क्योंकि उसे मालूम है कि ऐसी सोच दुनिया व आख़िरत में उसकी बर्बादी का सबब बन सकती है चुनाँचे ﷻ اللّٰہ का इर्शाद है:

तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: "बेशक जो लोग ﷻ اللّٰہ और उसके रसूल ﷺ को तक्लीफ़ देते हैं। उन पर दुनिया और आख़िरत में ﷻ اللّٰہ की फटकार है और (ﷻ اللّٰہ) ने उनके लिये ज़लील व ख़्वार कर देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है।" (सूरहतुल अहज़ाब अयात न॰ 57) (سورۃ الاحزاب آیت نمبر 57)

यहूदो नसारा की गुमराही की सब से बड़ी वजह: ﷻ اللّٰہ ने यहूदियों और ईसाइयों की गुमराही व बर्बादी की सब से बड़ी वजह का ज़िक्र यूँ फ़रमाया है:

तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: "उन लोगों (यहूदियों और ईसाइयों) ने ﷻ اللّٰہ को छोड़ कर अपने उलेमा और दर्वेशों (यानी सूफ़ियों) को अपना रब बना लिया था।" (सूरहतुल तौबा आयत न॰ 31) (سورۃ التوبہ آیت نمبر 31)

★ .... اِیْتُوْنِیْ بِکِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ ھٰذَآ اَوْ اَثٰرَۃٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ کُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ۝ [سورۃ الاحقاف ، آیت نمبر 4] (सूरातुल अहक़ाफ़, आयत न॰ 4)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "(काफिर लोग आप ﷺ से बहस करें तो फ़र्माओ): लाओ मेरे पास (अपनी कोई) किताब इस (क़ुरआन) से पहले या फिर इल्म के (नक़्ल शुदा) आसार, अगर तुम सच्चे हो".

उम्मते मुहम्मदिया ﷺ पर शैतान का ख़तरनाक हमला: हमारा हक़ीक़ी दुश्मन शैतान हमें भी यहूदो-नसारा की तरह अपने उलेमा और दर्वेश लोगों के पीछे अन्धा बन कर चलाते हुए गुस्ताख़ बनाकर हमेशा हमेशा के लिये नाकाम करवाना चाहता है। इसी लिये हमारे इन्तिहाई शफ़ीक़ आक़ा इमामे आज़म, इमामे कायनात, सय्यिदुल अव्वलीन वल आख़िरीन, सय्यिदुल अंबिया वल मुरसलीन, रहमतुल्लिल आलमीन, सय्यिदना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें पहले ही इस ख़तरे से मुताल्लिक़ आगाह कर दिया, चुनाँचे अबू सईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया:

तर्जुमा सहीह हदीस: यक़ीनन तुम भी पहले लोगों के तरीक़ों के पीछे चल पड़ोगे जिस तरह बालिश्त, बालिश्त के साथ और हाथ, हाथ के साथ (बराबर होता है) यहाँ तक कि अगर पहले लोगों ने किसी गोह के सुराख़ में घुसने का (बेहूदा और फ़ज़ूल) काम किया होगा तो तुम भी उनके पीछे चलोगे। पूछा गया या रसूलुल्लाह ﷺ उन पहले लोगों से मुराद क्या यहूदी और नस्रानी (ईसाई) हैं ? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "अगर वह मुराद नहीं तो और कौन मुराद हैं..? (सहीह बुख़ारी "किताबुल एतसाम" हदीस न॰ 7320, सहीह मुस्लिम "किताबुल इल्म" हदीस न॰ 6781)

(صحیح بُخاری "کتابُ الاعتصام" حدیث نمبر 7320 ، صحیح مسلم "کتابُ العلم" حدیث نمبر 6781)

मेरे भोले भाले मुसलमान भाइयों! आज शैतान ने उम्मत-ए-मुहम्मदिया ﷺ को भी यहूदो-नसारा की उसी डगर पे चला दिया है चुनाँचे बर्रे सग़ीर पाको-हिन्द के चन्द मशहूर उलेमा और दर्वेशों की अपनी किताबों से (जो आज भी छप रही हैं) कुल 32 ग़ैर इस्लामी व गुस्ताख़ाना नज़रियात (15 मुताल्लिक़ा शाने उलूहियत (ﷻ اللّٰہ की शान में) और 17 मुताल्लिक़ा शाने नुबुव्वत ﷺ) की निशान्देही और क़ुरआन व सहीह अहादीस से सहीह इस्लामी अक़ीदों का बयान भी लिखा जा रहा है। वल्लाह ﷻ! इस तहरीर का मक़्सद क़त्अन किसी भी ख़ास फ़िर्के के लोगो की दिल आज़ारी करना नहीं बल्कि उम्मते मुहम्मदिया ﷺ की ख़ैर-ख़्वाही मतलूब है।

15 ग़ैर इस्लामी नज़रियात मुताल्लिक़ा शान-ए-उलूहियत جل جلالہ

ग़ैर इस्लामी नज़रिया 1 मौलाना रशीद अहमद गंगोही साहब देवबंदी ख़ुद अपने बारे में लिखते हैं): "झूठा हूँ, कुछ नहीं हूँ तेरा ही ज़िल (साया) है। तेरा ही वजूद है। मैं क्या हूँ, कुछ नहीं हूँ। और जो मैं हूँ वह तू है और मैं और तू ख़ुद शिर्क दर शिर्क है।" (देवबंदी मौलाना शैख़ ज़करिया सहारनपूरी साहब "फ़ज़ाइले सदक़ात" सफ़्हा 558)

(دیوبندی: مولانا شیخ زکریا سہارنپوری صاحب "فضائل صدقات" صفحہ 558)

सहीह इस्लामी अक़ीदा 1 **तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम:** "हरगिज़ नहीं है कोई भी शै उसकी मिस्ल और वही सब कुछ सुनने वाला देखने वाला है।" (सूरहतुल शूरा: आयत न॰ 11) (سورۃ الشوریٰ آیت نمبر 11)

तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: पाक है तुम्हारा इज़्ज़त वाला रब्ब हर उस बुरी सिफ़त से जो (मुशरिक उसकी तरफ़) मन्सूब करते हैं। और तमाम रसूलों पर सलाम है। और सब तरह की तारीफ़ ﷻ اللّٰہ ही के लिये है जो तमाम जहानों का पालने वाला है।" (सूरहतुल सफ्फात आयात न॰ 180 से 182)

(سورۃ الصّفّٰت آیات نمبر 180 تا 182)

गै़र इस्लामी नज़रिया: ❷ हत्ता कि ग़लबे की हालत में इस तरह हो जाता है कि हज़रत बायज़ीद बसतामी कहते थे: سُبحانی ما اعظم شانی :(तर्जुमा: मैं पाक हूँ मेरी शान कितनी बुलन्द है।) हज़रत बायज़ीद बसतामी जो कुछ कह रहे थे उसका निशाना वैसे तो उनकी अपनी ज़बान थी लेकिन बोलने वाली हक़ ताला की ज़ात थी।" (कश्फ़ुल महजूब "बाब न॰ 14 जमा व तफ़र्क़ा का बयान: देवबंदी तर्जुमा: मौलाना अब्दुर्रऊफ़ फ़ारुक़ी सफ़्हा 405, बरेल्वी तर्जुमा: अल्लामा फ़ज़्लुद्दीन गोहर सफ़्हा 356) ("کشف المحجوب" باب نمبر 14 جمع و تفرقہ کا بیان: دیو بندی ترجمہ: مولانا عبدالروف فاروقی صفحہ 405 ، بریلوی ترجمہ: علامہ فضل الدین گوہر صفحہ 356)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ❷ **तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम:** "(ऐ महबूब ﷺ)तुम फ़रमाओ कि ﷲ ﷻ एक ही है ﷲ ﷻ बे नियाज़ है। ना उस से कोई पैदा हुआ और ना वह किसी से पैदा हुवा। और ना ही कोई उसकी बराबरी करने वाला है।" (सूरहतुल इखलास आयात न॰ 1 से 4) (سورۃ الا خلاص آیات نمبر 1 تا 4)

तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: और ठहरा लिया उन्होंने ﷲ ﷻ के लिये उसके बन्दों में से जुज़ (हिस्सेदार) बेशक इन्सान ख़ुला हुआ ना शुकरा है।" (सूरहतुल ज़ुखरुफ़ आयत न॰ 15) (سورۃ الزخرف آیت نمبر 15)

गै़र इस्लामी नज़रिया: ❸ हज़रत बायज़ीद बसतामी से रिवायत है कि फ़रमाया एक दफ़ा में मक्का मे था तो सिर्फ़ खाना काबा को देखा तो मैं ने कहा कि मेरा हज क़ुबूल नहीं क्योंकि इस तरह के पत्थर तो मैंने काफ़ी मर्तबा देख रखे हैं। दोबारा हज के लिये जब मक्का गया तो ख़ाना-ए-काबा भी देखा और काबा के रब की ज़ियारत भी की तो मैंने कहा कि अब भी हक़ीक़ते तौहीद हासिल ना हुई। तीसरी मर्तबा गया तो सिर्फ़ ﷲ ताला को देखा जबकि ख़ाना-काबा नज़रों से गायब था।" (कश्फ़ुल महजूब "बाब 11 हज़रत बायज़ीद बसतामी : देवबंदी तर्जुमा: मौलाना अब्दुर्रऊफ़ फ़ारुकी सफ़्हा 174, बरेल्वी तर्जुमा: अल्लामा फ़ज्लुद्दीन गोहर सफ़्हा 180)
("کشف المحجوب" باب 11 حضرت بایزید بسطامی: دیو بندی ترجمہ: مولانا عبدالروف فاروقی صفحہ 174 ، بریلوی ترجمہ: علامہ فضل الدین گوہر صفحہ 180)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ❸ **तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम:** "और जब मूसा عليه السلام हमारी मुलाक़ात को आए तो उनके रब ने उनसे गुफ़्तगू फ़रमाई (इसी दौरान) अर्ज़ किया ऐ मेरे रब! अपना दीदार मुझको करा दे कि मैं एक नज़र तुझको देख लूँ। हुक्म हुवा तुम मुझे हरगिज़ नहीं देख सकते। अल्बत्ता तुम उस पहाड़ की तरफ़ देखते रहो अगर वह अपनी जगह पर क़ायम रह गया तो तुम भी मुझे देख सकोगे। पस(फिर) जब उनके रब ने पहाड़ पर तजल्ली फ़रमाई तो पहाड़ के परख़च्चे उड़ा दिये। और मूसा عليه السلام बेहोश होकर गिर पड़े। फिर जब होश आया तो अर्ज़ किया:"ऐ ﷲ ﷻ तू पाक है मैं तेरी जानिब मे तौबा करता हूँ और सब से पहले ईमान लाने वाला हूँ।" (सूरहतुल आराफ़ आयत: 143) (سورۃ الاعراف آیت نمبر 143)

गै़र इस्लामी नज़रिया ❹ ﷲ ﷻ के ऐसे भी बन्दे हैं जिनको किसी वक़्त भी ग़फ़्लत नहीं होती चुनाँचे हज़रत शिब्ली फ़रमाते हैं मैंने एक जगह देखा कि एक मजनू (पागल) है लड़के उसको ढेले मार रहे हैं..मैंने उनको धमकाया तो वे लड़के यूँ कहने लगे कि यह शख़्स यूँ कहता है कि मैं ख़ुदा ﷻ को देखता हूँ.......मैंने जब पूछा कि तुम ख़ुदा को देखने के मुद्दई हो तो सुन कर उसने चीख़ मारी और कहा: शिब्ली! उस ज़ात की क़सम....अगर थोड़ी देर भी वह मुझसे गायब हो जाए तो मैं दर्दे फ़िराक़ से टुकड़े-टुकड़े हो जाऊँ। (देवबंदी:मौलाना शैख़ ज़करिया सहारनपूरी साहब फजाइले आमाल:फजाइले ज़िक्र पेज 574)
(دیو بندی : مولانا شیخ زکریا سہارنپوری صا حب "فضائل اعمال" فضائل ذکر صفحہ 574)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ❹ **तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम:** "कोई आँख उस(ﷲ ﷻ)का इहाता नहीं कर सकती और उसने हर आँख का इहाता कर रखा है। और वह बड़ा बारीक बीन बाख़बर है।" (सूरहतुल अनाम आयत न0 103) (سورۃ الانعام آیت نمبر 103)

गै़र इस्लामी नज़रिया: ❺ "हमारे हज़रत मौलाना शाह अब्दुल रहीम रायपूरी के ख़ुद्दाम में एक साहब थे जो कई कई रोज़ इस वजह से इस्तन्जा नहीं जा सकते थे कि हर जगह अनवार नज़र आते थे"। (देवबंदी: मौलाना शैख़ ज़करिया सहारनपूरी साहब फ़ज़ाइले आमाल फ़ज़ाइले ज़िक्र सफ़्हा:561)
(دیو بندی : مولانا شیخ زکریا سہارنپوری صا حب "فضائل اعمال" فضائل ذکر صفحہ 561)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ❺ **तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम:** "ऐ अहले किताब! अपने दीन में गुलू ना करो और ना कहो ﷲ ﷻ के मुताल्लिक़ मगर हक़ बात ही।" (सूरहतुल निसाअ आयत न0 171) (سورۃ النساء آیت نمبر 171)

तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: "(ऐ महबूब ﷺ तुम फ़रमाओ: ऐ अहले किताब! अपने दीन में ना हक़ गुलू और ज़ियादती ना करो और उन लोगों की नफ़्सानी ख़्वाहिशों की पैरवी ना करो जो पहले गुमराह हो चुके हैं। और बहुत से लोगों को गुमराह भी कर चुके हैं। और सीधी राह से हट चुके हैं।" (सूरहतुल मायदा, आयत न॰ 77) (سورۃ المائدہ آیت نمبر 77)

गै़र इस्लामी नज़रिया: ❻ "जब मजमा हुवा कुफ़्फ़ार का मदीना पर कि इस्लाम का कला कमा कर दें यह ग़ज़वा-ए-अहज़ाब का वाकिआ है। रब ﷻ ने मदद फ़रमाना चाही अपने हबीब ﷺ की, शिमाली हवा को हुक्म हूवा जा और काफ़िरों को नेस्त व नाबूद कर दे। हवा ने कहा "बीबियाँ रात को बाहर नहीं निकलतीं। तो ﷲ ﷻ ने उस हवा को बाँझ कर दिया। इसी वजह से शिमाली हवा से कभी पानी नहीं बरसता। फिर सबा से फ़रमाया तो उस ने अर्ज़ किया हम ने सुना और इताअत की। वह गई और कुफ़्फ़ार को बर्बाद करना शुरु किया।" (बरेल्वी मौलाना अहमद रज़ा खान साहब मलफ़ूजात हिस्सा-4,पेज 377)
(بریلوی : مولانا احمد رضاخاں صا حب "ملفوظات حصہ چہارم" صفحہ 377)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ❻ **तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम:** "फिर उस (ﷲ ﷻ) ने तवज्जह फ़रमाई आसमान की तरफ़ वह महज़ धुँवा था पस उसे और ज़मीन को फ़रमाया कि हाज़िर हो जाओ ख़ुशी से या मजबूरन। दोनों ने अर्ज़ की हम ख़ुशी से हाज़िर होते हैं। (सूरह हामीम सज्दा आयत न॰ 11) (سورۃ حٰم السجدہ آیت نمبر 11)

तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: "वह(ﷲ ﷻ)जब कभी किसी चीज़ का इरादा करता है तो उसे इतना फ़रमा देना काफ़ी है कि हो जा तो वह उसी वक़्त हो जाती है। पस पाक है वह(ﷲ ﷻ)जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाहत है। और उसी की तरफ़ तुम सब लौटाए जाओगे।" (सूरह यासीन आयात न॰82,83) (سورۃ یٰس آیات نمبر 82 تا 83)

गै़र इस्लामी नज़रिया: ❼ "ज़ुन्नून हज़रत यूनुस عليه السلام का लक़ब है क्योंकि आप कुछ रोज़ मछली के पेट में रहे..... उलेमा फ़रमाते हैं कि इस मछली का पेट ﷲ ताला के अर्श आज़म से अफ़ज़ल है कि एक पैग़म्बर का कुछ दिन तजल्ली गाह रहा। जब मछली का पेट अर्शे आज़म से अफ़ज़ल हो गया तो हज़रत आमिना ख़ातून का वह शिकम पाक जिस में सय्यिदुल अंबिया ﷺ नौ माह तक जल्वा अफ़रोज़ रहे वह तो अर्शे आज़म से कहीं

अफ़ज़ल है। इसकी तहक़ीक़ हमारी तफ़्सीरे नईमी जिल्द अव्वल में मुलाहिज़ा फ़रमाएँ।"
(बरेल्वी: मुफ़्ती अहमद यार नईमी साहब "शरह मिशकात" जिल्द-तीन पेज-357) (بریلوی : مفتی احمد یار نعیمی صاحب "شرح مشکوۃ" جلد سوم صفحہ 357)

सहीह इस्लामी अक़ीदा: 7 तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: "तो (ऐ महबूब ﷺ) तुम फ़रमा दो कि मेरे लिए ﷻ اللّٰہ काफ़ी है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। मैंने उसी पर भरोसा किया और वह (ﷻ اللّٰہ) अर्शे अज़ीम का मालिक है।" (सूरहतुल तौबा आयत न० 129) (سورۃ التوبہ آیت نمبر 129)

तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: "उन्होंने ﷻ اللّٰہ की क़द्र ना जानी जैसे जाननी चाहिये थी। बेशक ﷻ اللّٰہ क़ुव्वत वाला ग़ालिब है।" सूरहतुल हज आयत न0 74) (سورۃ الحج آیت نمبر 74)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया 8 "एक दिन ग़ौसे आज़म (सब से बड़े मददगार) शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी 7 औलिया के साथ बैठे हुए थे। निगाह बसीरत से मुलाहिज़ा फ़रमाया कि एक जहाज़ क़रीब ग़र्क़ होने के है। आप ने हिम्मत व तवज्जह बातिनी से उसको ग़र्क़ होने से बचा लिया।
(देवबंदी: मौलाना अशरफ़ अली थानवी साहब "इम्दादुल मुश्ताक़" सफ़्हा 44) (دیو بندی : مولانا اشرف علی تھانوی صاحب "امداد المشتاق" صفحہ 44)

सहीह इस्लामी अक़ीदा 8 तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: वह ﷻ اللّٰہ ही है जो तुमको ख़ुश्की और पानी में चलाता है। यहाँ तक कि जब तुम किश्ती में होते हो और वे किशतियाँ लोगों को मुवाफ़िक़ हवा के ज़रीए से लेकर चलती हैं और लोग उनसे ख़ुश होते हैं (कि अचानक) उन पर सख़्त हवा का एक झोंका आता है और हर तरफ़ से उनपर मौजें उठती चली जाती हैं। (हत्ता कि) वह समझ लेते हैं कि अब तो बुरी तरह फंस गए (फिर उस वक़्त) सब लोग ख़ालिस अक़ीदे के साथ सिर्फ़ उसी को पुकारते हैं कि (ऐ ﷻ اللّٰہ !) अगर तू हम को इससे बचा ले तो हम तेरे ही शुकरगुज़ार बन जाएँगे। फिर जब ﷻ اللّٰہ उनको बचा लेता है तो फ़ोरन ही वह ज़मीन में नाहक़ (शिर्किया अक़ाइद रखकर) सरकशी करने लगते हैं। ऐ लोगो! तुम्हारी सर्कशी तुम्हारे ही लिये वबाल बनने वाली है। दुनयवी ज़िन्दगी के चन्द फ़ायदे हैं फिर (मरने के बाद) हमारे पास ही तुमको आना है फिर हम तुम्हारे करतूत तुम्हें बतला देंगे। (सूरह: यूनुस आयत न० 22 से 23) (سورۃ یونس آیات نمبر 22 تا 23)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया 9 अर्ज़: "ग़ौस (विलायत का एक दर्जा) हर ज़माने में होता है ? इर्शाद: बग़ैर ग़ौस के ज़मीन व आसमान क़ायम नहीं रह सकते! (बरेल्वी: मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहब मलफ़ूज़ात हिस्सा-एक पेज-106) (بریلوی: مولانا احمد رضا خان صاحب "ملفوظات حصہ اول" صفحہ 106)

सहीह इस्लामी अक़ीदा 9 तर्जुमा क़ुरआन-ए- हकीम: "बेशक ﷻ اللّٰہ ही ने आसमानों और ज़मीन को थाम रखा है कि वे (अपनी जगह से) टल ना जाएं और अगर वे टल जाएँ तो फिर ﷻ اللّٰہ के सिवा कोई एक भी ऐसा नहीं के उनको थाम सके। "बेशक वह बरदाशत करने वाला और माफ़ करने वाला है।" (सूराह फ़ातिर आयत न० 41) (سورۃ فاطر آیت نمبر 41)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया 10 "मगर मैं (अहमद रज़ा खान साहब) ने कभी इस क़िस्म की मदद ना तलब की। जब कभी भी मैंने इस्तानत की (यानी मदद तलब की) या ग़ौस (अब्दुल क़ादिर जीलानी) ही कहा: यक दर गीर महकम गीर (तर्जुमा: एक चोखट पकड़ो और मज़बूती से पकड़ो)"
(बरेल्वी: मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहब मलफ़ूज़ात हिस्सा दोम "सफ़्हा न०-277) (بریلوی : مولانا احمد رضاخان صاحب "ملفوظات حصہ سوم" صفحہ 277)

सहीह इस्लामी अक़ीदा 10 तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: ऐ ﷻ اللّٰہ हम तेरी ही इबादत करते हैं और हम तुझ ही से मदद (दुआ) मांगते है"।
(सूराह फ़ातिहा आयत न० 4) (سورۃ الفاتحہ آیت نمبر 4)

तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: "और (ऐ बन्दे) अगर ﷻ اللّٰہ तुझे किसी तक्लीफ़ में डाल दे तो उस तक्लीफ़ को दूर करने वाला कोई नहीं मगर वही। और (ऐ बन्दे) अगर वह तुझको कोई फ़ायदा पहुँचाना चाहे तो वह हर चीज़ पर पूरी तरह क़ुदरत रखने वाला है और वही अपने बन्दों पर ग़ालिब व बरतर है।" (सूराह अल अनाम आयत न० 17 से 18)

तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: "और उस से बढ़ कर गुमराह और कौन होगा ? जो ﷻ اللّٰہ को छोड़ कर ऐसों को (दुआ के लिये) पुकारता है जो क़यामत तक उसकी पुकार सुन ना सकें बल्कि उसके पुकारने से बे ख़बर हों और जब (क़यामत में) लोगों को जमा किया जाए तो वह हस्तियाँ उसकी दुशमन हो जाएं और उसकी पुकार से साफ़ इन्कार कर जाएं"। (सूराह अल अहक़ाफ़ आयत न० 5 से 6)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया 11 "हाजत पूरी होने के लिये सलातुल इसरार भी निहायत ही मौस्सर है........इसे नमाज़े गोंसिया भी कहते हैं...इसकी तर्कीब यह है कि बाद नमाज़ मग़रिब सुन्नते पढ़ कर दो रकाअत नफ़िल पढ़े और बेहतर यह है कि अल्हम्दु लिल्लाह के बाद 11 बार قل هو الله احد पढ़े। सलाम के बाद ﷻ اللّٰہ की हम्दो सना करे फिर नबी ﷺ पर 11 बार दरुद व सलाम अर्ज़ करे.....फिर इराक़ की जानिब 11 क़दम चले और हर क़दम पर कहें : يا غوث الثقلين ويا كريم الطرفين اغثني وامددني في قضاء حاجتي ياقاضي الحاجات (तर्जुमा: ऐ जिनों और इन्सानों के फ़रियाद रस! और ऐ माँ बाप की तरफ़ से बुज़ुर्ग मेरी फ़रियाद को पहुंचिये और मेरी हाजत में मेरी मदद कीजिए। ऐ हाजतों को पूरा करने वाले......"
(बरेल्वी: मौलाना अम्जद अली क़ादरी "बहार शरीअत हिस्सा चहारुम" सफ़्हा न०263 बरेल्वी: मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी "फ़ैज़ाने सुन्नत" फ़ज़ाइले नवाफ़िल हिस्सा 1054)
(بریلوی : مولانا امجد علی قادری "بہارشریعت حصہ چہارم" صفحہ 263 ، بریلوی : مولانا محمد الیاس عطار قادری "فیضان سنت" فضائل نوافل صفحہ 1054)

सहीह इस्लामी अक़ीदा 11 तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: और(ऐ महबूब ﷺ) जब मेरे बन्दे मेरे बारे में पूछते हैं तो उन्हें यह बता दो के मैं बहुत क़रीब हूँ। हर पुकारने वाले की पुकार को क़ुबूल करता हूँ जब वह मुझे पुकारता है। इसी लिये लोगों को भी चाहिये कि वे मेरी बात मान लिया करें। और मुझ पर ईमान रखें यही उनकी भलाई का बाअ़स है। "(सूरहतुल बक़रह आयत न० 186) (سورۃ البقرہ آیت نمبر 186)

तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: "भला कौन क़ुबूल करता है एक बेक़रार की फ़रियाद को जब वह उसे पुकारता है? और(फिर कौन है जो) दूर कर देता है

उसकी तक्लीफ़ को ? और (कौन है जिसने) तुम्हें ज़मीन में (अगलों का) ख़लीफ़ा बनाया ? क्या कोई और माबूद भी है ﷲ के साथ ? तुम लोग बहुत कम ही ग़ौरो-फ़िक्र करते हो। (सूरहतुल नम्ल आयत न० 62) (سورة النمل آیت نمبر 62)

तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: बेशक ﷲ इस गुनाह को तो हरगिज़ माफ़ नहीं करेगा कि कोई उसके साथ (किसी क़िस्म का) शिर्क करे। (हाँ) इसके अलावा के गुनाह माफ़ कर देगा अगर ख़ुद चाहेगा। और जो कोई भी ﷲ के साथ शिर्क में मुब्तला हुवा तो बेशक वह दूर की गुमराही में जा पड़ा। (सूरहतुल निसा आयत न0 116) (سورة النساء آیت نمبر 116)

तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "हर नबी ؑ को एक मक़बूल दुआ मिलती है मेरी दुआ (शिफ़ाअत) हर उस शख़्स को पहुँचेगी जो इस हाल में फ़ौत हुआ कि उसने ﷲ के साथ किसी भी क़िस्म का शिर्क ना किया होगा"। (सहीह बुख़ारी हदीस न० 6304, सहीह मुस्लिम "किताबुल ईमान" हदीस न० 491) (صحیح بُخاری "کتابُ الدعوٰت" حدیث نمبر 6304، صحیح مُسلم "کتابُ الایمان" حدیث نمبر 491)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ⓬ एक मर्तबा सय्यिद जुनैद बग़दादी दरया-ए-दजला पर तशरीफ़ लाए और या ﷲ कहते हुए उस पर ज़मीन के मिस्ल चलने लगे। एक शख़्स ने अर्ज़ की मैं किस तरह आऊँ फ़रमाया: या जुनैद या जुनैद कहता चला आ। उसने यही कहा और दरिया पर ज़मीन की तरह चलने लगा। जब बीच दरिया में पहुँचा तो शैतान लईन ने दिल में वसवसा डाला (कि) हज़रत ख़ुद तो या ﷲ कहें और मुझसे या जुनैद या जुनैद कहलवाते है..उसने या ﷲ कहा और साथ ही ग़ौता ख़ाया। पुकारा हज़रत मैं चला, फ़रमाया वही कहो या जुनैद या जुनैद उसने कहा और दरिया पर ज़मीन की तरह चलने लगा फरमया : "अरे नादान! अभी तो जुनैद तक पहुँचा नहीं ﷲ तक रसाई की हवस है। (बरेल्वी मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहब "मल्फ़ूज़ात" हिस्सा-एक, पेज, न0 97) (بریلوی : مولانا احمد رضاخان صا حب "ملفوظات حصہ اول" صفحہ 97)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ⓬ तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास बयान करते हैं कि मैं एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ के पीछे सवारी पर बैठा हुआ था आप ﷺ ने फ़रमाया : "ऐ लड़के! तू ﷲ के अहकाम की हिफ़ाज़त कर ﷲ तेरी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। ﷲ के हुक़ूक़ का ख्याल रख तू उसे अपने सामने पायेगा और जब तू सवाल करे तो सिर्फ़ ﷲ से करना और जब तू मदद तलब करे तो ﷲ ही से मदद तलब करना। और जान ले कि अगर पूरी उम्मत भी जमा होकर तुझे फ़ायदा पहुँचाना चाहे तो नहीं पहुँचा सकेगी मगर जो ﷲ चाहे और अगर वह तुझे कोई नुक़्सान पहुँचाना चाहे तो नहीं पहुँचा सकेगी। मगर जो ﷲ चाहे, क़लम उठ गये और सहीहफ़े ख़ुश्क हो गये। (جامع ترمذی "ابوب صفة القیامة" حدیث نمبر 2516) (जामिया तिर्मिज़ी अब्वाब "सिफ़तुल क़यामह" हदीस न0 2516)

तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना अनस बिन मालिक ؓ बयान करते हैं: "जब कभी भी रसूलुल्लाह ﷺ को कोई तक्लीफ़ व परेशानी पहुँचती तो आप ﷺ का तकिया कलाम यही हुवा करता था: يا حي يا قيوم برحمتك استغيث (तर्जुमा) "ऐ ख़ुद से ज़िन्दा, हर शै को थामने वाले मैं तेरी रहमत के साथ तेरी मदद का सवाल करता हूँ"। (जामिया तिर्मिज़ी "अब्वाबुद्दावात" हदीस न० 3524, अल मुस्तदरक लिल हाकिम "किताबुद्दुआ" हदीस न० 1828 (جامع ترمذی "ابوبُ الد عوات" حدیث نمبر 3524 ، المستدرك للحاكم "کتابُ الدُعاء" حدیث نمبر 1828)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ⓭ "मुरीद को यक़ीन के साथ जानना चाहिये कि शैख़ (पीर) की रुह किसी ख़ास जगह में मुक़य्यद और महदूद नहीं है। पस मुरीद जहाँ भी होगा ख़्वाह क़रीब हो या बईद तो गो शैख़ के जिस्म से दूर है लेकिन उसकी रुहानियत से दूर नहीं।" (देवबंदी: मौलाना रशीद अहमद गंगोही साहब "इम्दादुस्सुलूक उर्दू" पेज-64) (دیوبندی : مولانا رشید احمد گنگوھی صا حب "امدادالسلوك اردو" صفحہ 64)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ⓭ तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: और बेशक हमने ही इन्सान को पैदा किया है और हम जानते हैं उन ख़्यालात को भी जो उसके अन्दर उठते हैं और हम उसकी शहे रग से भी ज़्यादा उसके क़रीब हैं। (सूरहतुल क़ाफ आयत न० 16) (سورة ق آیت نمبر 16)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ⓮ "(तसव्वुर शैख़ का तरीक़ा तालीम करते हैं) यह ख़्याल रहे कि मेरा शैख़ (पीर) मेरे सामने है। और अपने क़ल्ब को उसके क़ल्ब के नीचे तसव्वुर करे........फिर कुछ अर्से के बाद यह हालत हो जाएगी कि शज्रो-हजर व दीवार पर शैख़ की सूरत साफ़ नज़र आयेगी। यहाँ तक कि नमाज़ में भी जुदा ना होगी। फिर हर हाल साथ पाओगे।" (بریلوی : مولا نا احمد رضاخان صا حب "ملفوظات حصہ دوم" صفحہ 152) (बरेल्वी मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहब "मल्फ़ूज़ात" हिस्सा-2, सफ़्हा-152)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ⓮ सय्यिदना उमर फ़ारुक ؓ बयान करते हैं: "हम एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर थे कि एक आदमी वहाँ आया जिस के कपड़े बहुत ज़्यादा सफ़ेद और बाल इन्तिहाई काले थे.....फिर उस आदमी ने सवाल किया कि मुझे एहसान के बारे में कुछ बतलायें। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया(एहसान यह है कि) तुम ﷲ की इबादत इस तरह करो कि गोया तुम उसे देख रहे हो। और अगर तुम उसे नहीं देख रहे तो वह यक़ीनन तुम्हें देख रहा है।" (सहीह मुस्लिम "किताबुल ईमान" हदीस न० 93) (صحیح مُسلم "کتابُ الایمان" حدیث نمبر 93)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ⓯ "एक दफ़ा मौलाना रशीद अहमद गंगोही जोश में थे और तसव्वुर शैख़ (पीर) का मसला दर पेश था। तो फ़रमाया कि कह दूँ ? अर्ज़ की जरुर कहे। फिर फ़रमाया कि कह दूँ? अर्ज़ किया ज़रुर इर्शाद फ़रमाएं। तो फ़रमाया:तीन साल कामिल मेरे हज़रत इम्दादुल्लाह (मुहाजिर मक्की) का चेहरा मेरे क़ल्ब में रहा है और मैंने उनसे पूछे बग़ैर कोई काम नहीं किया।" (देवबंदी मौलाना अशरफ़ अली थानवी साहब "अरवाहे सलासा" हिकायत 307सफ़्हा 274) (دیوبندی : مولانا اشرف علی تھانوی صا حب "ارواح ثلاث" حکایت 307 صفحہ 274)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ⓯ तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: "और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो ﷲ के अलावा और हस्तियों को ﷲ के मद्दे मुक़ाबिल ठहराकर उनसे ऐसी मुहब्बत करते हैं जैसी मुहब्बत ﷲ से करनी चाहिये। और (उनके बरअक्स) जो ईमान लाने वाले हैं वे ﷲ से शदीद तरीन मुहब्बत रखते हैं और ऐ काश ये ज़ालिम लोग जानते जबकि ﷲ के अज़ाब को देख कर (जान ही लेंगे) कि सारी ताक़त ﷲ ही की है। और बेशक ﷲ सख़्त अज़ाब देने वाला है। (तो हर गिज़ ये लोग शिर्क ना करते)।" (सूरहतुल बकरा आयत न० 165) (سورة البقرہ آیت نمبر 165)

17 ग़ैर इस्लामी नज़रियात मुताल्लिक़ा शान-ए-नबुव्वत ﷺ

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ❶ "एक रात आप (यानी इमाम अबू हनीफ़ा رحمہ اللہ) ने ख़्वाब देखा कि आप ﷺ की हड्डियों को बाज़ से चुन रहे हैं (यानी अलग अलग कर रहे हैं).....ख़्वाब की ताबीर दरयाफ़्त की.....मुहम्मद बिन सीरीन رحمہ اللہ ने फ़रमाया: आप ﷺ उलूम-ए-नुबुव्वत और सुन्नत की हिफ़ाज़त में बड़े बुलन्द मर्तबे पर पहुँचेंगे।" (कश्फ़ुल महजूब बाब 11 हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा: देओबंदी तर्जुमा: मौलाना अब्दुर्रऊफ़ फ़ारुक़ी सफ़्हा 150 बरेल्वी तर्जुमा: मौलाना फ़ज़्लुद्दीन गोहर सफ़्हा 162) ("کشف المحجوب" باب 11 حضرت امام ابو حنیفہ: دیوبندی ترجمہ: مولانا عبدالروف فاروقی صفحہ 150 بریلوی ترجمہ: مولانا فضل الدین گوھر صفحہ 162)

सहीह इस्लामी अ़क़ीदा ❶ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना औस बिन औस رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया:"बेशक जुमे का दिन तुम्हारे दिनों में से अफ़ज़ल दिन है।...उस दिन मुझ पर कसरत से दरुद पढ़ो क्योंकि तुम्हारा दरुद मुझ पर पेश किया जाता है। सहाबा رضی اللہ عنہم ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह ﷺ हमारा दरुद आप पर कैसे पेश किया जाएगा जब कि आप ﷺ बोसीदा हो चुके होंगे...! आप ﷺ ने फ़रमया बेशक اللہ ﷻ ने मिट्टी के लिये हराम कर दिया है कि वह अंबिया-ए-किराम علیہم السلام के जिस्मों को खाए।" (सुनन अबी दाऊद "किताबुस्सलाह" हदीस न० 1047, सुनन नसाई "किताबुल जुमा" हदीस न० 1374, सुनन इब्ने माजा "किताबु इक़ामतिस्सलाह" हदीस न० 1085)

(سُنن ابی دائود "کتابُ الصلوۃ" حدیث نمبر 1047 ، سُنن نسائی "کتابُ الجُمعہ" حدیث نمبر 1374 ، سُنن ابن ماجہ "کتابُ ء اقامۃ الصلوۃ" حدیث نمبر 1085)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ❷ "अगर बाज़ उलूम-ए-ग़ैबिया मुराद हैं तो उस में हुज़ूरे अकरम ﷺ की क्या तख़्सीस है। ऐसा इल्म-ए-ग़ैब ज़ैदो उमर बल्कि हर सबी (बच्चा) व मजनू (पागल) बल्कि सारे हैवान और चोपायों के लिये भी हासिल है"।(देओबंदी मौलाना अशरफ़ अली थानवी साहब "हिफ़्ज़ुल ईमान" सफ़्हा 13)

(دیوبندی : مولانا اشرف علی تھانوی صاحب "حفظ الایمان" صفحہ 13)

सहीह इस्लामी अ़क़ीदा ❷ **तर्जुमा कुरआन-ए-हक़ीम:** "ऐ महबूब ﷺ ज़रा देखो तो ये (गुस्ताख़) लोग तुम्हारे मुताल्लिक कैसी कैसी मिसालें बयान करते हैं। सो वे गुमराह हो गए अब हिदायत का रास्ता नहीं पा सकते।" (सूरा: बनी इस्राईल आयत न० 48, सूरतुल फ़ुरक़ान आयत न० 9)

(سورۃ بنی اسرائیل آیت نمبر 48 ، سورۃ الفرقان آیت نمبر 9)

तर्जुमा कुरआन-ए-हक़ीम: "वह (اللہ ﷻ ही) गैब का जानने वाला है पस वह अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला नहीं करता। सिवाय अपने रसूल के जिसे वह पसंद करले (बाक़ी लोगों में से) लेकिन उसके आगे पीछे भी पहरेदार मुक़र्रर कर देता है।" (सूरा: जिन आयात न० 26 से 27) (سورۃ الجن آیات نمبر 26 تا 27)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ❸ "(नमाज़ के दौरान) ज़िना के वसवसे से अपनी बीवी की मुजामिअ़त का ख़्याल बेहतर है। और शैख़ या उसी जैसे और बुज़ुर्गों की तरफ़ ख़्वाह जनाब रिसालत मआब रसूल ﷺ ही हों अपनी हिम्मत को लगा देना अपने बैल और गधे की सूरत में डूब जाने से बुरा है।"

(देओबंदी: मौलाना अब्दुल हई लखवी साहब "सिराते मुस्तक़ीम" पेज-118) (دیوبندی : مولانا عبد الحی لکھنوی صاحب "صراط مستقیم" صفحہ 118)

सहीह इस्लामी अ़क़ीदा ❸ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ बयान करते हैं: जब हम नबी अकरम ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ते थे तो (तशहहुद) में यह कहते थे: السلام علی اللہ قبل عبادہ السلام علی جبرائیل السلام علی میکائیل السلام علی فلان و فلان:(यानी اللہ ﷻ पर सलाम हो क़ब्ल उसके बन्दों पर सलाम के। जिब्राईल पर सलाम हो, मीकाईल पर सलाम हो फ़लाँ और फ़लाँ और फ़लाँ पर) जब नबी ﷺ नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो हमारी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया: तुम ऐसे ना कहा करो क्योंकि اللہ ﷻ तो ख़ुद अस्सलाम है यूँ कहा करो: التحیات للہ والصلوت والطیبات السلام علیک ایھا النبی ورحمۃ اللہ وبرکاتہ ..... (तर्जुमा:मेरी क़ौली (ज़ुबानी), बदनी (बदन की) और माली इबादात सिर्फ़ اللہ ﷻ के लिये ख़ास हैं। ऐ नबी ﷺ आप पर اللہ ﷻ की सलामती, रहमतें और बरकतें हों। हम पर और اللہ ﷻ के नेक बन्दों पर भी सलामती हो।) बस जब वो कोई ऐसा कहेगा तो आसमान व ज़मीन में मौजूद हर नेक बन्दे को (और ख़ास तौर पर नबी ﷺ को) यह सलाम (اللہ ﷻ की तरफ़ से) पहुच जाएगा।" (सहीह बुख़ारी "किताबुल अज़ान" हदीस न0 831, सहीह मुस्लिम "किताबुस्सलाह" हदीस न० 897)

(صحیح بُخاری "کتابُ الا ذان" حدیث نمبر 831 ، صحیح مُسلم حدیث نمبر "کتابُ الصلوۃ" 897)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ❹ और यक़ीन जान लेना चाहिये कि हर मख़्लूक़ बड़ा हो या छोटा वह اللہ ﷻ की शान के आगे चमार से भी ज़्यादा ज़लील है....(आगे चल कर ख़ुद ही बड़ा हो छोटा की तारीफ़ भी बयान करदी चुनाँचे लिखते हैं): अंबिया और औलिया को जो اللہ ﷻ ने सब से बड़ा बनाया है। सो उनमें यही बड़ाई है की اللہ ﷻ राह बताते हैं।" (देओबंदी: मौलाना शाह इस्माईल देहल्वी शहीद साहब "तक्वियतुल ईमान" पेज-48,35)

(دیوبندی : مولاناشاہ اسماعیل دھلوی شہید صاحب "تقویۃ الایمان" صفحہ 48 اور 35)

सहीह इस्लामी अ़क़ीदा ❹ **तर्जुमा कुरआन-ए-हकीम:** "और इज़्ज़त तो सिर्फ़ اللہ ﷻ के लिये, उसके रसूल ﷺ के लिये और ईमान वालों के लिये है। मगर मुनाफ़िक़ो को उसका इल्म नहीं है। (सूरहतुल मुनाफ़िक़ून आयत न० 8) (سورۃ المنافقون آیت نمبر 8)

तर्जुमा कुरआन-ए-हकीम: बेशक जो लोग اللہ ﷻ और उसके रसूल ﷺ की मुख़ालफ़त करते हैं वे ज़लील तरीन लोगों में शुमार होंगे।"

(सूराह: मुजादला आयत न० 20) (سورۃ المجادلہ آیت نمبر 20)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ❺ "सूरहतुल कहफ़ आयत न0 110 "ऐ महबूब ﷺ फ़रमादो कि मैं तुम्हारे जैसा बशर हूँ".....इस आयत में कुफ़्फ़ार से ख़िताब है क्योंकि हर चीज़ अपनी ग़ैर जिन्स से नफ़रत करती है। लिहाज़ा फ़रमाया गया कि ऐ कुफ़्फ़ार तुम मुझ से घबराओ नहीं। मैं तुम्हारी जिन्स से हूँ यानी बशर हूँ (जैसा कि) कोई शिकारी जानवरों की सी आवाज़ निकाल कर शिकार करता है इससे कुफ़्फ़ार कोअपनी तरफ़ माइल करना मक़्सूद है।"

(बरेलवी: मौलाना मुफ़्ती अहमद नईमी साहब "जाअल हक़्क़" मसले पर एतराज़ात के बयान में सफ़्हा 145) (بریلوی: مولانا مفتی احمد نعیمی صاحب "جاء الحق" مسئلہ بشریت پر اعتراضات کے بیان میں صفحہ 145)

सहीह इस्लामी अक़ीदा **तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम:** “तुम रसूलुल्लाह ﷺ के पुकारने को ऐसा ना ठहरालो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है।” ❻
(सूरहतुल नूर आयत न० 63) (سورة النور آیت نمبر 63)

तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम:(“ऐ महबूब ﷺ) ज़रा देखो तो ये (गुस्ताख़ लोग तुम्हारे मुताल्लिक़ कैसी कैसी मिसालें बयान करते हैं। सो वे गुम्राह हो गये कि अब हिदायत का रास्ता नहीं पा सकते।” (सूराह: बनी इस्राईल आयत 48, सूराह: फ़ुरक़ान आयत न० 9) (سورة بنی اسرائیل آیت نمبر 48 ، سورة الفرقان آیت نمبر 9)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ❻ “हज़रत दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام की एक नज़र जब वहाँ पड़ी जहाँ ना पड़नी चाहिये थी। यानी रोरिया की बीवी पर तो आप عَلَيْهِ السَّلَام को हक़ ताला की तरफ़ से तन्बीह का सामना करना पड़ा। हमारे पैगम्बर ﷺ की एक इसी तरह की निगाह हज़रत ज़ैद رَضِيَ اللهُ عَنْهُ की बीवी पर पड़ी तो हज़रत ज़ैद رَضِيَ اللهُ عَنْهُ पर उनकी बीवी हराम हो गई (इन्ही से बाद में नबी ﷺ ने निकाह फ़रमाया यानी उम्मुल मौमिनीन सय्यिदा ज़ैनब رَضِيَ اللهُ عَنْهَا) इसलिये कि हज़रत दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام की नज़र हालत-ए-सहव में (यानी हालत-ए-होश) में थी। और हमारे पैग़म्बर ﷺ की नज़र हालत-ए- सुक्र (यानी मदहोशी की हालत) में थी।” (कश्फ़ुल माजूब बाब 14 सुक्र और सहव का बयान: देओबंदी तर्जुमा: मौलाना अब्दुर्रऊफ़ फ़ारुक़ी सफ़्हा 291, बरेल्वी तर्जुमा: मौलाना फ़ज़्लुद्दीन गोहर सफ़्हा 267)
(" کشف المعجوب " باب 14 سُکر اورصحو کا بیان: دیوبندی ترجمه : مولانا عبدالروف فاروقی صفحه 291 ، بریلوی ترجمه: مولانا فضل الدین گوهر صفحه 267)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ❻ **तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम:** “क़सम है सितारे की जब वह उतरे। तुम्हारे साहब (मुहम्मद ﷺ) ना तो कभी बहके हैं और ना कभी टेढ़ी राह पर चले हैं। और ना ही वे अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स से कोई बात कहते हैं। (बल्कि) वे तो नहीं मगर वहिह जो(اللّٰه جَلَّ جَلَالُهُ की तरफ़ से)उन्हें की जाती है।” (सूराह: नज्म आयत न० 1 से 4) (سورة النجم آیت نمبر 1 تا 4)

तर्जुमा सहीह हदीस : सय्यिदना अबू सईद ख़ुदरी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ रिवायत करते हैं कि नबी ﷺ पर्दा नशीन कुँवारी लड़कियों से भी ज़यादा शर्म व हया रखने वाले थे। जब कोई ऐसी चीज़ देखते जो आप ﷺ को नागवार होती तो हम आप ﷺ के चेहरा-ए-मुबारक से पहचान लेते थे। (सहीह बुख़ारी “किताबुल अदब” हदीस न० 6102, सहीह मुस्लिम “किताबुल फ़ज़ाइल” हदीस न० 6032) (صحیح بُخاری " کتابُ الا دب" حدیث نمبر 6102 ، صحیح مُسلم " کتاب’الفضا ئل" حدیث نمبر 6032)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ❼ आप ﷺ की हयात (क़ब्रे मुबारक में) दुनिया की सी है बिला मुकल्लफ़ होने और यह हयात मखसूस है आंहज़रत ﷺ और शुहदा के साथ बर्ज़ख़ी नहीं है जो हासिल है तमाम मुसलमानों को (मरने के बाद)।” (देओबंदी मौलाना अहमद सहारनपुरी साहब “अल मुहन्नद अलल मुफन्नद”सफहा 36)
(دیو بندی : مولانا خلیل احمد سهارنپوری صا حب "المهند علی المفند" صحفه 36)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ❼ **तर्जुमा क़ुराने हकीम:** “और मत कहा करो उन्हें जो क़त्ल कर दिये जाएं اللّٰه جَلَّ جَلَالُهُ की राह में कि वे मुर्दा हैं बल्कि वे जिन्दा हैं मगर तुम्हें उनकी ज़िन्दगी का कोई शऊर नहीं है।” सूरतुल बकरह: आयत न० 154) (سورة البقرہ آیت نمبر 154)

तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: पस जिन लोगों के दिलों में टेढ़ापन होता है तो वे मुतशाबिहा आयात (जिनका उन्हे शऊर नहीं)के पीछे लग जाते हैं ताकि उससे फ़ितना तलाश करें और मुरादी असली का पता लगाएं। हालांकि उनकी हक़ीक़त सिवाय اللّٰه جَلَّ جَلَالُهُ के और कोई नहीं जानता। और जो लोग इल्म में पुख़्ता हैं वे तो यही कहते हैं कि हम तो इन आयात पर ईमान लाते हैं (बग़ैर कैफ़ियत के) ये तमाम आयात हमारे रब ही की तरफ़ से हैं और नसीहत नहीं हासिल करते मगर सिर्फ़ वे जो अक़्लमन्द हैं।” (सूरह आले इमरान आयत न० 7) (سورة ال عمران آیت نمبر 7)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ❽ “अंबिया-ए-किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की हयात (क़ब्रों में) हक़ीक़ी हिस्सी (physical) दुनियवी है...बल्कि सय्यिदी (मेरे आक़ा) मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी ज़रक़ानी फ़रमाते हैं कि अंबिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की क़ुबूर मुताहिरा में अज़वाजे मुतहहरात पेश की जाती हैं और वे उनके साथ शब्बाशी फ़रमाते हैं।”(बरेल्वी मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहब “मलफ़ूज़ात” हिस्सा सोम सफ़्हा 249) (بریلوی : مولانا احمد رضا خاں صا حب " ملفوظات حصه سوم " صفحه 249)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ❽ **तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम**(“ऐ महबूब ﷺ)ज़रा देखो तो ये(गुस्ताख़) लोग तुम्हारे मुताल्लिक़ कैसी कैसी मिसालें बयान करते हैं। सो वे गुमराह हो गए पस रास्ता हिदायत नहीं पा सकते।” (सूरह बनी इस्राईल आयत न० 48, सूरतुल फुर्क़ान आयत न० 9) (سورة بنی اسرائیل آیت نمبر 48 ، سورة الفرقان آیت نمبر 9)

तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम: “ऐ ईमान वालों मत बुलन्द करो अपनी आवाज़े नबी करीम ﷺ की आवाज़ से और उनसे ऊँची आवाज़ में बातें मत करो जैसा कि तुम आपस में एक दूसरे से करते हो। कहीं ऐसा ना हो कि तुम्हारे आमाल बर्बाद कर दिये जाएं और तुम्हें उसकी ख़बर भी ना हो सके।”
(सूरह हुजरात आयत न० 2) (سورة الحجرات آیت نمبر 2)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ❾ सय्यिद अहमद रिफ़ाही मशहूर अकाबिरे-सूफ़िया में से एक हैं उनका क़िस्सा मशहूर है कि जब वह 555 हि० में हज्ज से फ़ारिग़ होकर क़ब्रे रसूल ﷺ के मुक़ाबिल खड़े हुए तो दो अरबी आशार (शेर) पढ़े : **शेरों का उर्दू तर्जुमा:** “दूरी की हालत में अपनी रुह को आसताना-ए-अक़्दस पे भेजा करता था, वह मेरी नायब बनकर आसताना-ए-अक़्दस चूमती थी अब जिस्मों की हाज़िरी की बारी आई है तो अपना हाथ मुबारक अता फ़रमाएं। ताकि मेरे होंट उसको चूमें।” इस पर क़ब्र शरीफ़ से हाथ मुबारक बाहर निकला और उन्होंने उसको चूमा। कहा जाता है कि उस वक़्त 90 हज़ार का मजमा मस्जिदे नबवी ﷺ में मौजूद था। जिन्होंने इस वाक़िए को देखा उनमें पीराने पीर शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحِمَهُ اللّٰه का नाम भी ज़िक्र किया जाता है।” (देओबंदी: मौलाना शैख़ ज़करिया सहारनपूरी “फ़ज़ाइले हज्ज” नवीं फ़स्ल सफ़्हा 130, बरेल्वी: मौलाना मुहम्मद इलयास क़ादरी “फ़ैज़ाने सुन्नत” “मुसाफ़िहा व मुअ़नक़ा की सुन्नतें” सफ़्हा 654) (دیو بندی : مولانا شیخ ذکریا سهارنپوری "فضائل حج " نویں فصل صفحه 130 ، بریلوی : مولانا محمد الیاس قادری "فیضان سُنت" "مصافحه و معانقه کی سُنتیں" صفحه 654)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ❾ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ عَنْهُ रिवायत करते हैं :“सय्यिदना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के ज़माने में जब लोग कहत साली का शिकार हो जाते तो आप رَضِيَ اللهُ عَنْهُ सय्यिदना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के वसीले से बारिश की दुआ करते और यूँ अर्ज़ करते: “ऐ اللّٰه جَلَّ جَلَالُهُ बेशक हम पहले पहल अपने नबी ﷺ को तेरी बारगाह मे वसीले के तौर पर पेश करते थे और (उनकी दुआ की बरकत से) तू हम पर बारिश बर्सा दिया करता था। (आप ﷺ की वफ़ात के बाद) अब हम तेरी बारगाह में अपने नबी ﷺ के चचा को वसीले के तौर पर लेकर आए हैं।

पस (उनकी दुआ से) हम पर बारिश नाज़िल फ़रमा। पस यूँ उन पर बारिश बरस पड़ती।" (सहीह बुख़ारी "किताबुल इस्तिस्क़ा" हदीस न0 1010)
(صحیح بُخاری "کتابُ الا ستسقاء" حدیث نمبر 1010)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ⑩ "उस शहन्शाह (ﷻ की तो यह शान है कि एक उनमें एक हुक्म कुन से चाहे तो करोड़ों नबी और वली, जिन्न और फ़रिश्ते, जिब्राईल और मुहम्मद ﷺ के बराबर पैदा कर डाले।" (देओबंदी: मौलाना शाह इस्माइल देहेल्वी साहब तक्वियतुल ईमान, सफहा 55)
(دیوبندی : مولانا شاہ اسماعیل دھلوی شہیدصا حب "تقویۃ الایمان" صفحہ 55)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ⑩ **तर्जुमा कुरआन-ए-हकीम** मुहम्मद ﷺ तो नहीं तुम मर्दों में से किसी के बाप बल्कि वे तो ﷻ के रसूल हैं और अंबिया-ए-किराम ﷺ के सिलसिले को ख़त्म करने वाले हैं और हर चीज़ ﷻ के इल्म में है।" (सूरह अहजाब आयत न0 40) (سورۃ الاحزاب آیت نمبر 40)

तर्जुमा कुरआन-ए-हकीम: और कामिल है तेरे रब की बात सच होने में और इन्साफ़ में, उसकी बातों को कोई तब्दील करने वाला नहीं है और वही सुनने और जानने वाला है। और (ऐ बन्दे) अगर तू ज़मीन पर बसने वाली अक्सरियत की पैरवी करेगा तो वे तुझे ﷻ के रास्ते से गुमराह कर देंगे। वे तो सिर्फ़ अपने गुमान के पीछे चलते हैं। और बिल्कुल क़यासी बाते करते हैं।" (सूराहतुल अनाम आयत न0 115 से 116) (سورۃ الانعام آیات نمبر 115 تا 116)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ⑪ "अगर बिल्फर्ज़ ज़माना-ए-नबवी ﷺ के बाद भी कोई नबी पैदा हो तो फिर भी ख़ात्मियत मुहम्मदी ﷺ में कुछ फ़र्क ना आएगा।"(देओबंदी: मौलाना क़ासिम नानोत्वी साहब "तहज़ीरुन्नास" सफ़हा 34) (دیوبندی : مولانا قاسم نانوتوی صا حب "تحذیرالناس" صفحہ 34)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ⑪ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना सोबान ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया: मेरी उम्मत में 30 झूठे पैदा होंगे उनमें से हर एक यही दावा करेगा कि वह ﷻ का नबी है जबकि मैं ख़ातिमुन्नबिय्यीन हूँ मेरे बाद कोई नबी नहीं। और मेरी उम्मत का एक गिरोह हमेशा हक़ पर रहेगा वे ग़ालिब ही रहेंगे, और कोई मुख़ालफ़त करने वाला उनको नुक़्सान नहीं पहुँचा सकेगा यहाँ तक कि ﷻ का हुक्म (क़यामत) आ जाए।" (सुनन अबी दाऊद "किताबुल फ़ितन" हदीस न0 4252, तिर्मिज़ी "किताबुल फ़ितन" हदीस न0 2202, सुनन इब्ने माजा "किताबुल फ़ितन" हदीस न0 3952) (سُنن ابی داود "کتابُ الفتن" حدیث نمبر 4252 ، ترمذی "کتابُ الفتن" حدیث نمبر 2202 ، سُنن ابن ماجہ "کتابُ الفتن" حدیث نمبر 3952)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ⑫ (मौलाना रशीद अहमद गंगोही साहब देओबंदी ख़ुद अपने बारे में लिख़ते हैं): सुन लो हक़ वही है जो रशीद अहमद की जबान से निकलता है। और बक़सम कहता हूँ कि मैं कुछ नहीं हूँ मगर इस ज़माने में हिदायत और निजात मौक़ूफ़ है मेरी इत्तबा पर।"
(देओबंदी: मौलाना आशिक़ इलाही मेरठी साहब "तज़्किरतुर्रशीद" जिल्द 2 सफ़हा 17) (دیو بندی : مولاناعاشق الٰہی میرٹھی صا حب "تذکرۃ الرشید" جلد 2صفحہ 17)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ⑫ **तर्जुमा कुरआन-ए-हकीम** "(ऐ महबूब ﷺ)तुम फ़रमाओ कि (ऐ लोगों!) अगर तुम ﷻ से मुहब्बत करते हो तो पस मेरी (यानी नबी ﷺ की) इत्तबा करो। फिर ﷻ तुमको अपना महबूब बना लेगा और तुम्हारे गुनाह भी माफ़ कर देगा।"
(सूरह आले इमरान आयत न0 31) (سورۃ ال عمران آیت نمبر 31)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ⑬ हज़रत (मौलाना रशीद अहमद गंगोही साहब देओबंदी) ने फ़रमाया : "हक ताला ने मुझसे वादा फ़रमाया है कि मेरी ज़बान से ग़लत नहीं निकलवाएगा।" (देओबंदी:मौलाना अशरफ़ अली थानवी साहब "अरवाहे सलासा" हिकायत 308 सफ़हा 276)
(دیو بندی : مولانا اشرف علی تھانوی صا حب "ارواح ثلاثہ" حکایت 308صفحہ 276)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ⑬ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ﷺ बयान करते हैं कि जो हदीस भी रसूलुल्लाह ﷺ से सुनता उसको याद करने के लिये लिख लिया करता था। फिर मुझे कुछ लोगों ने लिखने से मना किया और कहा देखो रसूलुल्लाह ﷺ भी एक इन्सान हैं और आप ﷺ गुस्सा और ख़ुशी दोनों किस्म की हालत में गुफ़्तगू फ़रमाते हैं। मैंने यह सुन कर लिखना बंद कर दिया। फिर आप ﷺ से इस बात का तज़्किरा किया तो आप ﷺ ने अपनी मुबारक ज़बान पकड़ कर फ़रमाया: "इस ज़बान से हक़ बात के सिवा कुछ नहीं निकलता।"
(सुनन अबी दाऊद "किताबुल इल्म" हदीस न0 3646) (سنن ابی داؤد "کتابُ العلم" حدیث نمبر 3646)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ⑭ शैख़ुल हिन्द महमूदुल हसन देओबंदी साहब (असीरे मालटा) ने रशीद अहमद गंगोही साहब के मरने पर उनकी शान में यह शेर कहा:"ज़बाँ पर अहले हवा की है क्यों अहले हुबुलः शायद उठा आलिम से कोई बानी इस्लाम का सानी"
(देओबंदी: मौलाना महमूदुल हसन साहब कुल्लियाते शैख़ुल हिन्द सफ़हा 87 "मरसिया" सफ़हा 5) (دیو بندی : مولانا محمود الحسن صا حب "کلیات شیخ الھند" صفحہ 87 "مرثیہ" صفحہ 5)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ⑭ **तर्जुमा कुरआन-ए-हकीम:** "ऐ नबी ﷺ बेशक हमने तुम्हें गवाह और ख़ुशख़बरी देने वाला, और डर सुनाने वाला बना कर भेजा। और ﷻ की तरफ़ बुलाने वाला उसी के हुक्म से, और रोशन आफ़ताब (बना कर भेजा)।" (सूरह अहजाब आयत न0 45, 46)
(سورۃ الاحزاب آیات نمبر 45 تا 46)

तर्जुमा सहीह हदीस : सय्यिदना अबू हूरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : रोज़े क़यामत आदम ﷺ की सारी औलाद का सरदार मैं होउंगा। सब से पहले मुझे क़ब्र से उठाया जाएगा। सब से पहले मैं शिफ़ारिश करुंगा। और सब से पहले मेरी शिफ़ारिश कुबूल की जाएगी।" (सहीह मुस्लिम किताबुल फजाइल, हदीस न0 5940) (صحیح مُسلم "کتابُ الفضائل" حدیث نمبر 5940)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ⑮ (अहमद रज़ा ख़ाँ साहब आख़िरी वसिय्यत में लिखते हैं।) "तुम सब मुहब्बत और इत्तफ़ाक़ से रहो और हत्तुल इम्कान इत्तबाए-शरीअत ना छोड़ो। और मेरा दीनो-मज़हब जो मेरी कुतुब(यानि किताबों) से ज़ाहिर है उस पर मज़बूती से क़ायम रहना हर फ़र्ज़ से अहम फ़र्ज़ है। ﷻ ताअला तौफ़ीक़ दे। वस्सलाम!" (बरेल्वी मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहब "वसाया शरीफ़" सफ़हा 20) (بریلوی : مولانا احمد رضا خاں صا حب "وصایا شریف" صفحہ 20)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ⑮ **तर्जुमा सहीह हदीस:** "बेशक मैं अपने बाद तुम मे दो ऐसी अज़ीम चीज़े छोड़ कर जा रहा हुँ कि अगर उन्हें मज़बूती से पकड़ लोगे तो कभी गुमराह नहीं होंगे। Ⅰ अल्लाह ﷻ की किताब और Ⅱ उसके रसूल ﷺ की सुन्नत (जो सही अहादीस से माख़ूज़ हों।)"

(अल मोत्ता लिल मालिक "किताबुल क़द्र" हदीस न० 1628, अलमुस्तदरक लिल हाकिम "किताबुल इल्म" हदीस न० 318)

[الموطاء للمالك "كتابُ القدر" حديث نمبر 1628 ، المُستدرك للحاكم "كتابُ العلم" حديث نمبر 318]

सवाल: क्या मुहम्मदी ﷺ निस्बत छोड़ कर हनफ़ी, क़ादरी, जाफ़री, चिश्ती, बरेल्वी, वग़ैरह कहलवाना दुरुस्त है ?

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ⑯ "एक दफ़ा (ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी के पास) एक शख़्स आया और अर्ज़ किया कि मैं मुरीद होने आया हूँ। फ़रमाया जो कुछ हम कहेंगे करेगा अगर यह शर्त मन्ज़ूर है तो मुरीद करुंगा। उसने कहा जो कुछ आप कहेंगे वही करुंगा। आप ने फ़रमाया तू कल्मा इस तरह पढ़ता है لاالہ الا اللہ محمد رسول اللہ तो एक बार इस तरह पढ़ لا الہ الااللہ چشتی رسول اللہ चूँकि रासिख़ुल अक़ीदा था उसने फ़ौरन पढ़ दिया। ख़्वाजा ने उससे बैत ली और बहुत कुछ ख़िलअत व नेमत अता फ़रमाया और कहा: मैंने फ़क़त तेरा इम्तिहान लिया था कि तुझको मुझसे किस क़द्र अक़ीदत है वरना मेरा मक़्सूद यह ना था कि तुझसे इस तरह कल्मा पढ़वाऊँ। (ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन गन्ज शकर साहब (बरेल्वी + देओबंदी) बुर्ज़ुग "हश्त बहिश्त (फ़वाइदुल मसाकीन)" सफ़्हा 19)

(خواجہ فرید الدین گنج شکر صاحب (بریلوی + دیو بندی) بزرگ "ھشت بھشت (فوائد السالکین)"صفحہ 19)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ⑯ **तर्जुमा सहीह हदीस :** "सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस्लाम की बुनियाद 5 चीज़ों पर रखी गई है :

1. गवाही देना لا الہ الا اللہ और यह कि मुहम्मद अब्दुहू व रसूलुह और
2. नमाज़ क़ायम करना और
3. ज़कात देना और
4. हज्ज करना और
5. रमज़ान के रोज़े रखना।"

(सहीह बुख़ारी "किताबुल ईमान" हदीस न० 8, सहीह मुस्लिम "किताबुल ईमान" हदीस न० 113)

(صحیح بُخاری "کتابُ الایمان" حدیث نمبر 8 ، صحیح مُسلم "کتابُ الایمان" حدیث نمبر 113)

ग़ैर इस्लामी नज़रिया ⑰ एक शख़्स ने ख़्वाब में देखा जिसमें उसने कल्मा पढ़ा لا الہ اللہ اشرف علی رسول اللہ ...फिर बाद में बेदार होकर भी बे इख़्तियारी में कहने लगा اللھم صل علیٰ سیدنا و نبینا و مولانا اشرف علی अपना ख़्वाब लिखकर अशरफ़ अली थानवी साहब के पास भेजा तो उन्होंने जवाब दिया: उस वाकिए में तसल्ली थी कि जिसकी तरफ़ तुम रुजू करते हो (यानी अशरफ़ अली थानवी साहब देओबंदी) वह बिऔनिही ताला मुत्तबऐ सुन्नत है।"

(देओबंदी: मौलाना अशरफ़ अली थानवी साहब "अल इम्दाद" अदद 8 माह सफ़र 1336 हि० जिल्द 3 सफ़्हा 35)

(دیو بندی : مولانا اشرف علی تھانوی صاحب "الا مداد" عدد 8 ماہ صفر 1336ھ جلد 3 صحفہ 35)

सहीह इस्लामी अक़ीदा ⑰ **तर्जुमा कुरआन-ए-हकीम** "बेशक अल्लाह ﷻ और उसके फ़रिश्ते नबी ﷺ पर दरुद भेजते हैं। (तो) ऐ ईमान वालो तुम भी उन पर दरुद और ख़ूब सलाम भेजो।" (सूराहतुल अहज़ाब आयत न० 56) (سورة الاحزاب آیت نمبر 56)

अफ़ज़ल तरीन दरुद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ، کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ ، اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ ،

اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ، کَمَا بَارَکْتَ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ ، وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ ، اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ

[صحیح بُخاری : 3370 ، صحیح مُسلم : 908]

﴿ ! اےاللہ ﷻ रहमत भेज **मुहम्मद** ﷺ पर और आले मुहम्मद ﷺ पर जैसा की तूने रहमतें नाज़िल फरमाई इब्राहीम عليه السلام पर और आले इब्राहीम عليه السلام पर बेशक तू तारीफ़ वाला बुज़ुर्गी वाला है.! اےاللہ ﷻ बर्कतें नाज़िल फरमा **मुहम्मद** ﷺ पर और आले मुहम्मद ﷺ पर जैसा की तूने बर्कतें भेजी इब्राहीम عليه السلام पर और आले इब्राहीम عليه السلام पर बेशक तू तारीफ़ वाला बुज़ुर्गी वाला है. ﴾

(सहीह बुख़ारी हदीस न० 3370, सहीह मुस्लिम हदीस न० 908)

ख़ूब तरीन सलाम:

اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ اَیُّھَا النَّبِیُّ وَرَحْمَةُ اللہِ وَبَرَکَاتُہٗ [صحیح بُخاری : 1202 ، صحیح مُسلم : 897]

﴿ ऐ नबी ﷺ ! आप ﷺ पर अल्लाह ﷻ की रहमत और उसकी बरकतें हो. सलाम हो हम पर और अल्लाह ﷻ के नेक बन्दों पर ﴾

(सहीह बुख़ारी हदीस न० 1202, सहीह मुस्लिम हदीस न० 897)

सिरात-ए-मुस्तक़ीम के हुसूल से मुताल्लिक़ अहम तरीन गुज़ारिशात

ग़ैर जानिबदार होकर ख़ुद तहक़ीक़ करें: मेरे मुसलमान भाइयों! यह क़ीमती ज़िन्दगी सिर्फ़ एक बार मिली है इसे ग़नीमत जानते हुए हर मामले में सिर्फ़ एक ही मकतबा-ए-फ़िक्र के उलेमा की बात ना सुने बल्कि तमाम मक्तबा-ए-फिक्र के उलेमा से तहक़ीक़ करने के बाद ﷻ से दुआ मांगते हुए ख़ुद हक़ तक पहुँचने की कोशिश करें इंशाल्लाह ﷻ हक़ ज़रुर मिलेगा चुनाँचे हमारे रहबरो-रहनुमा **सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह** ﷺ ने वफ़ात के बाद अपनी उम्मत को शख़िसयात के बजाए सिर्फ़ महफ़ूज़ शै यानी वहीह **(क़ुरआन व सहीह अहादीस)** के साथ ताल्लुक मज़बूत बनाने की वसिय्यत फ़रमाई: **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज्जतुल विदा के मौक़े पर इर्शाद फ़रमाया: बेशक मैं अपने बाद तुम में दो ऐसी (अज़ीम) चीज़े छोड़ कर जा रहा हूँ कि अगर उन्हें मज़बूती से पकड़ लोगे तो कभी गुमराह ना होगे: ❶ ﷻ की किताब और ❷ उसके रसूल ﷺ की सुन्नत (जो सहीह अहादीस से माख़ूज़ हो)।" (अल मौत्ता लिल मालिक "किताबुल क़द्र" हदीस न0 1662, अल मुस्तदरक लिल हाकिम "किताबुल इल्म" हदीस न0 290) (الموطاء للمالك "كتابُ القدر" حديث نمبر 1662 ، المستدرك للحاكم "كتابُ العلم" حديث نمبر 290)

क़ुरआन व अहादीस आसान और महफ़ूज़ हैं: चूंकि सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के बाद किसी नबी علیہ السلام ने नहीं आना अब वही (क़ुरआन व सहीह अहादीस) हर इन्सान की ही ज़रुरत है। इसी लिये ﷻ ने इसे इतना आसान कर दिया है कि एक मोची से लेकर एक आलिम, एक इन्जीनियर और डाक्टर के लिये भी समझना बिल्कुल आसान है। चुनाँचे 4 मर्तबा इर्शाद है: **तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम:** "बेशक हम ही ने इस क़ुरआन को नसीहत हासिल करने के लिये आसान कर दिया है तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला ?" (सूरतुल क़मर आयत न0: 17) (سورة القمر آیت نمبر 17) अब चुँकि सय्यिदना अबूबक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ से लेकर क़यामत तक आने वाले आख़िरी मुसलमान की हिदायत और कामयाबी का वाहिद ज़रीआ सिर्फ़ और सिर्फ़ वहीह (क़ुरआन-व-सहीह अहादीस) है। इसी लिये ﷻ ने सिर्फ़ और सिर्फ़ क़ुरआन व सहीह अहादीस की ही हिफ़ाज़त का ज़िम्मा लिया है। चुनाँचे इसी ज़िम्न में ﷻ का इर्शाद होता है:**तर्जुमा क़ुरआन-ए-हकीम:**"बेशक हम ही ने इस नसीहत (क़ुरआन-व- सहीह अहादीस) को नाज़िल किया और हम ही इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं।" (सूरतुल हज्र आयत न0 9) (سورة الحجر آیت نمبر 9)

इमामे आज़म, सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के मुबारक ज़माने से लेकर आज तक मुसलसल एक गिरोह चलता आ रहा है जिसने पहले 300 साल के मुसलमानों **(अहले सुन्नत, अस्हाबुल हदीस)** की तरह अक़ायद और आमाल की बिदआत से बच कर आज तक सिर्फ़ क़ुरआन व सहीह अहादीस को ही थाम रखा है। उस मुबारक गिरोह के उलेमा भी और अवाम भी हमेशा क़ुरआन व सहीह अहादीस ही की दावत देते हैं। यही वजह है कि 11 सितम्बर 2001 के बाद सिर्फ़ 9 माह में 34,000 अमेरिकन ने बग़ैर किसी आलिम के ख़ुद से क़ुरआन का तर्जुमा अंग्रेज़ी में पढ़ कर इस्लाम क़ुबूल किया। और उसके बाद से इन 8 गुलिस्तां सालों में औसतन 400 अमेरिकन रोज़ाना क़ुरआन पढ़ कर मुसलमान हो रहे हैं। अगर एक अंग्रेज़ को क़ुरआन ख़ुद पढ़ कर हिदायत मिल सकती है तो हमें **उर्दू या हिन्दी** तर्जुमा पढ़ कर हिदायत क्यों नहीं मिल सकती ?

क़यामत के दिन गुस्ताख़ों का अन्जाम: जहाँ तक मशहूर बुज़ुर्गों की अपनी किताबों का मामला है तो उन किताबों की कोई गारंटी नहीं है कि दुरुस्त हालत में हैं या नहीं बल्कि उन तमाम किताबों में ऐसी ऐसी बातें भी लिखी हैं जो सरासर गुस्ताख़ी पर मब्नी और क़ुरआन व सहीह अहादीस के ख़िलाफ़ हैं, जिसकी कुछ झलकियाँ आप ने मुलाहिज़ा फ़रमा ही ली हैं। चुनाँचे उन बुर्ज़ुगों के बारे में हुस्ने ज़न रखने का वाहिद तरीक़ा यह है कि हम उन किताबों की प्रिंटिंग बन्द कर दें और सिर्फ़ क़ुरआन व सहीह अहादीस को मज़बूती से थाम लें वरना क़यामत के दिन ﷻ और उसके महबूब ﷺ की बारगाह में सख़्त शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ेगा हत्ता कि शिफ़ाते रसूल ﷺ हासिल करने की बजाए शिकायते रसूल ﷺ मुक़द्दर बन जाएगी। चुनाँचे ﷻ का क़ुरआन-ए-हकीम में इर्शाद है:

तर्जुमा क़ुरान-ए-हकीम: "और उस (क़यामत) के दिन ज़ालिम शख़्स अपने हाथों को चबा चबा कर कहेगा। (हाए अफ़्सोस) ऐ काश मैंने रसूल ﷺ का रास्ता इख़्तियार किया होता। (हाए अफ़्सोस) ऐ काश मैंने फ़लाँ (गुस्ताख़) को दोस्त ना बनाया होता। उसने मुझे गुमराह कर दिया हालाँकि नसीहत (क़ुरआन-व-सहीह अहादीस) मेरे पास आ पहुँची थी। और शैतान तो इन्सान को धोका ही देने वाला है।और रसूल ﷺ (शिकायत के अन्दाज़ में) अर्ज़ करेगें: ऐ मेरे रब्ब ! मेरी उम्मत ने क़ुरआन को पीठ के पीछे डाल रखा था।" (सूरतुल फ़ुरक़ान आयत न0 27 से 30) (سورة الفرقان آیت نمبر 27 تا 30)

इसी ज़िम्न में सय्यिदना अबूसईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ और सय्यिदना अबू हाज़िमा رضی اللہ عنہ एक इन्तिहाई रिक़्क़त अंगेज़ हदीस बयान करते हैं जो पूरी सिहाहे सित्ता में मौजूद है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया:

तर्जुमा सहीह हदीस: बरोज़े क़यामत में अपने होज़े कौसर पर मौजूद हूँगा और वहाँ तूम्हारा मेज़बान बनूँगा। जो उस होज़े कौसर तक पहुँचेगा वह उसका मशरुब पियेगा। और जो मशरुब पियेगा वह कभी प्यासा ना होगा। कुछ लोगों को मुझसे कुछ फ़ासले पर पकड़ लिया जाएगा। फिर मेरे और उनके दरमियान रुकावट खड़ी कर दी जाएगी तो मैं अर्ज़ करुंगा : "ऐ मेरे रब ये मेरे मानने वाले मेरे उम्मती हैं! तो मुझसे कहा जाएगा कि आप ﷺ को नहीं मालूम कि इन लोगों ने आप ﷺ के बाद किस तरह की बिदअतें ईजाद कर ली थीं। और (यूँ अपने दीन से) एड़ियों के बल फिर गये थे। आप ﷺ फरमाते हैं फिर मैं कहूँगा سُحقا سُحقا لمن بدل بعدی (उनको मुझसे दूरी हो, उनको मुझसे दूरी हो, जिन्होंने मेरे बाद दीन में तब्दीलियाँ पैदा कर दीं।)" अब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका رحمہ اللہ इस हदीस को रिवायत करने के बाद दुआ किया करते थे: "ऐ ﷻ हम तेरी पनाह मांगते हैं इस शर से कि हम अपनी एड़ियों के बल पलट जाएं या दीन के मामले में किसी आज़माइश में डाले जाएं। (सहीह बुखारी "किताबुर्रिक़ाक़" हदीस न0 6593, सहीह मुस्लिम "किताबुल फ़ज़ाइल" हदीस न0 5972) (صحیح بُخاری "كتابُ الرقاق" حديث نمبر 6593 ، صحیح مُسلم "كتابُ الفضائل" حديث نمبر 5972)

दुआ: ऐ ﷻ! जो लोग इन गुस्ताख़ाना नज़रियात रखने वाले गिरोहों से अलाहिदगी इख़्तियार करके सिर्फ़ और सिर्फ़ क़ुरआन व सहीह अहादीस का रास्ता अपनाएं तू उनको बरोज़े क़यामत अपनी रहमते कामिला से ❶ अपने प्यारे महबूब इमामे आज़म, सय्यिदना मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ की शफ़ाअत नसीब फ़रमा। ❷ रसूलुल्लाह ﷺ के मुबारक हाथों से जाम-ए-कौसर पीना नसीब फ़रमा। ❸ रसूलुल्लाह ﷺ के झन्डे तले जगह नसीब फ़रमा। और ❹ बिल आख़िर हमेशा हमेशा के लिये जन्नतुल फ़िरदौस में रसूलुल्लाह ﷺ का मुबारक पड़ोस नसीब फ़रमा।"(आमीन! या रब्बुल आलमीन)